eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

'मिश्र' जी के नवगीतों में राष्ट्रीय चेतना

डॉ0 पूजा श्रीवास्तव[1]
[1]असि0 प्रो0– संस्कृत विभाग, महिला महाविद्यालय, किदवई नगर कानपुर, उ0प्र0

Received: 21 July 2026 Accepted & Reviewed: 25 July 2026, Published: 31 July 2026

Abstract

संस्कृत साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा की अमूल्य धरोहर है। हजारों वर्षो से निरन्तर यह अपनी अन्तर्निहित ज्ञान की थाती से हमारे चिंतन और भावबोध की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनी हुई है। यह साहित्य केवल प्राचीन काल की अभिव्यक्ति ही नहीं अपितु सतत् प्रवाहमान परंपरा हैं जो समय समय पर नवीन संदर्भो में अपने स्वरूप को परिवर्तित करते हुए समाज के मार्गदर्शन का कार्य करती रही है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में जहॉ धर्म,नीति, आदर्श और जीवन मूल्यों का प्रतिपादन मिलता हैं वहीं आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों ने अपनी अक्षर तूलिका के माध्यम से समकालीन समस्याओं, विसंगतियो और राष्ट्रीय चेतना को अपनी कृतियों में स्थान देकर इसी परंपरा को जीवंत बनाए रखा है। इन्हीं आधुनिक साहित्यकारों में एक नाम 'अभिराज' प्रो0 राजेन्द्र मिश्र का भी हैं जिन्होंने आधुनिक काव्य में सामाजिक मूल्यों का गहन और गंभीर चिंतन किया तथा संस्कृत गीत काव्य परंपरा को समकालीन राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। मिश्र जी ने अपने नवगीतों में राष्ट्र प्रेम, सांस्कृतिक गौरव, नैतिकता,समरसता और मानवीय मूल्यों का अत्यन्त प्रवाहपूर्ण चित्रण किया है। प्रस्तुत शोधपत्र में मिश्र जी नवगीतों के माध्यम से सामाजिक चेतना, एवं राष्ट्रीय भावना से युक्त विविध दृष्टान्त प्रस्तुत किये जायेंगे जिसमें मिश्र जी ने राष्ट्रीयता,देशप्रेम के यशोगान के साथ साथ भारतीय समाज की दुष्प्रवृत्तियों को भी पाठक के सामने अत्यन्त बेबाकी के साथ रखकर राष्ट्रीय प्रेम को प्रकट किया है। निःसंदेह डॉ राजेन्द्र मिश्र आधुनिक संस्कृत साहित्य के विशिष्ट एवं सशक्त रचनाकार है।

मुख्य शब्द– संस्कृत भाषा, साहित्य, परम्परा, भारत, राष्ट्रीय एकता,राजेन्द्र मिश्र, विश्वशान्ति, सामाजिक चेतना,लोकतन्त्र, सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्र भक्ति,विश्वबन्धुत्व,वाग्वधूटी, श्रुतिम्भरा,मधुपर्णी, मृद्वीका, सद्भाव ,स्वदेश, भारत भूमि, धरोहर,समकालीन, आदि।

Introduction

संस्कृत भाषा विश्व की समस्त भाषाओं में श्रेष्ठ ,सम्पन्न और प्राचीनतम है। यह मात्र एक भाषा ही नहीं अपितु एक परंपरा का पर्याय है एवं ज्ञान– विज्ञान की संचित विरासत है जिसमें गोते लगाते हुए भारतीय मनीषियों ,विद्ववजनों ने अपने आपको अभिव्यक्त किया है। हजारों वर्षो से निरन्तर यह अपनी अन्तर्निहित ज्ञान की धरोहर से हमारे चिंतन और भावबोध की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनी हुई है। संस्कृत और उनकी परंपराओं ने सहस्र शताब्दियों तक भारत को सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता में बॉधें रखने का महनीय कार्य किया है। इसीकारण भारतीय ऋषियों व मनीषियों ने संस्कृत भाषा को देववाणी,सुरभारती,गीर्वाड्वाणी आदि नाम से सम्बोधित किया है। संस्कृत भाषा का वांड़मय अपनी अद्वितीय विशेषताओं के कारण आज भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

आज भारत के मौलिक स्वरूप को समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान अति आवश्यक है,क्योंकि यह केवल एक प्राचीन भाषा ही नहीं अपितु प्रत्येक युग में नवचेतना के साथ स्वयं को पुनः रचती हुई नवीन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

शास्त्र परंपराओं को प्रतिष्ठित करती रही है। ' साहित्य समाज का दर्पण है।' इस सद्युक्ति को लेकर संस्कृत साहित्य का अध्ययन वस्तु सापेक्ष ही होगा।

साहित्य सृजन की परंपरा में जिसप्रकार प्राचीन संस्कृत साहित्यकारों ने धर्म,नीति,आदर्श और जीवनमूल्यों का सशक्त प्रतिपादन करते हुए समाज को अमूल्य साहित्यिक धरोहर दी है,उसीप्रकार आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों ने भी अपनी अक्षरतूलिका के माध्यम से समकालीन समस्याओं,विसंगतियों और राष्ट्रीय चेतना से युक्त उत्कृष्ट एवं विपुल साहित्य देकर उसे समृद्ध बना रहे है। इन्हीं आधुनिक साहित्यकारों में एक नाम 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र जी का भी है, जो संस्कृत साहित्य के आकाश में ज्योतिपुंज ,मार्तण्ड के समान प्रकाशमान, तथा सुरभारती के हीरक व एक संवेदनशील गीतकार है,जिनकी काव्य– दृष्टि भारतीय संस्कृति, लोकपरंपरा और समकालीन सामाजिक यथार्थ से पोषित है। उनकी कवितायें उनके संस्कारों में निवास करती हुई प्रतीत होती है।

'अभिराज' प्रो0 राजेन्द्र मिश्र का संसार बहुआयामी एवं व्यापक है। उनकी शताब्दिक रचनायें उनकी प्रतिभा का प्रमाण प्रस्तुत करती है। अपनी कीर्ति और अनवरत सृजनशीलता के बल पर उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त साहित्यिक मेधा का वर्चस्व स्थापित किया । उन्होंने केवल संस्कृत साहित्य गीतों में ही नहीं अपितु समकालीन हिंदी कविता तथा भोजपुरी साहित्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे वे इन तीनों धाराओं की त्रिवेणी के संवाहक बन जाते है। उनके काव्यों में निरंतर परिष्कार और नवीनता दिखाई देती हैं। उनके गीत प्रौढ़ नायिका की भांति अपने वैभव और विलास से साहित्य रसिकों के हृदय प्रदेश में कौतुक और विस्मय उत्पन्न करती हुई जन मन का कंठहार बन गई हैं। उन्होंने आधुनिक काव्य में सामाजिक मूल्यों का गहन और गंभीर चिन्तन किया है,तथा संस्कृत गीत काव्य परम्परा को समकालीन राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। उनके नवगीतों में राष्ट्र प्रेम केवल भावात्मक उद्घोष नहीं है अपितु सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक चेतना से रूप में फलीभूत होती है। उनका राष्ट्र बोध भारत की प्राचीन गौरवशाली परंपरा, सांस्कृतिक एकता और सामाजिक उत्तरदायित्वों से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत सदैव से ही विश्वशान्ति ,समत्व के भाव, वसुधैवकुटुम्बकम् तथा अध्यात्म का समर्थक रहा है। आज भी भारत की विचारधारा आत्मउत्थान तक ही सीमित नहीं अपितु वैश्विक मानवता के कल्याण और अभ्युदय के लिए समर्पित है। इसी भाव को 'मिश्र' जी अपने गीतकाव्य मधुपर्णी के द्वितीय खण्ड 'गीतम्' में व्यक्त करते हुए कहते हैं–

विश्वकल्याणे मतिः
विश्वनिर्माणे रतिः
भारतीयो भारतीयो भारतीयोऽहम्
भारतीयो भारतीयो भारतीयस्त्वम्।।1

अर्थात् मेरी बुद्वि विश्व कल्याण में लगी हुई है और मेरी रूचि विश्व निर्माण में हैं। मै भारतीय हूँ, भारतीय हूँ और तुम भी भारतीय हो। यहॉ मिश्र जी ने भारतीयता की पहचान को केवल भौगोलिक सीमा तक ही सीमित नहीं रखा है अपितु उसे भारतीय संस्कृति के मूलभाव 'वसुधैवकुटुम्बकम्' से जोड़ते हुए कहते है जिसकी सोच विश्व हित में और जिसका कर्म विश्व निर्माण हो वही भारतीय है। एक अन्य स्थान पर भारत की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए मिश्र जी कहते है कि–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

लोकतन्त्रस्थापने सर्वोदये नित्यम्
विश्वशान्तौ विश्वबन्धुत्वे च यत्सत्यम्,
देश एषोऽग्रेसरः, विश्व मंगलशेखरः
भारतीयो भारतीयो भारतीयोऽहम्
भारतीयो भारतीयो भारतीयस्त्वम्।।2

जो सत्य लोकतन्त्र की स्थापना में,सभी के उत्थान में, विश्वशान्ति में और विश्वबन्धुत्व में निहित है। यही हमारे देश की उन्नति का आधार है और वह विश्व मंगल का शिरोमणि हैं। प्रस्तुत पंक्तियो में राष्ट्रीय भाव और आत्मपहचान की भावना स्पष्टतः झलक रही है। 'भारतीयो भारतीयो' की पुनरावृत्ति से उत्साह,ओज और राष्ट्रीय चेतना की भावना जाग्रत होती है। इसी प्रकार 'रक्ष रक्ष भारतम्' के समस्त पद्य राष्ट्र प्रेम, कर्त्तव्य परायणता तथा सांस्कृतिक गौरव के सशक्त दृष्टान्त दृष्टव्य है–

विश्वसंस्कृते र्विधायकं विश्वबन्धुतासमर्थकम्
अद्य सीदति स्वके गृहे देववन्दितं नु भारतम्
रामकृष्णयोरियं धरा न्याय धर्मसत्यरक्षिणी
जैन बौद्वशासनेरतं धुर्यतामवाय भारतम्।।
भक्तसिहं चन्द्रशेखरौ सैन्सनायकस्सुभाषकः
यत्कृते जहुः स्वजीवनं क्वाद्य तद् विशाल भारतम्।।3

उक्त पंक्तियों में 'मिश्र' जी भारत को विश्व संस्कृति का आद्य स्रोत तथा समस्त मानवता की सांस्कृतिक चेतना का मूलाधार मानते हैं। राम,कृष्ण,जैन,बौद्ध धर्म का उल्लेख करते हुए वे भारत की धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की परपंरा ,जैन और बौद्ध धर्म की अंहिसा,करूणा तथा समन्वय की भावना का उल्लेख करते हुए कवि मिश्र जी भारतीय धार्मिक चेतना की उदारता और सहिष्णुता को रेखांकित करते हैं,तथा भगत सिंह,चंद्रशेखर और सुभाष जैसे क्रांतिवीरों का स्मरण, भारतीय राष्ट्रीय जीवन में समाहित त्याग, बलिदान और स्वाधीनता संकल्प की गौरवशाली परंपरा को उद्घाटित करते हैं।

'श्रुतिम्भरा' के जयताद् भारत राष्ट्रम्' में भारत की सनातन परंपराओं ,समृद्ध संस्कृति और उच्च आदर्शो को युग–युगान्तरों में भव्यता और गौरव के साथ प्रतिष्ठित करते हुए उद्घोष करते हैं–

'' भव्यमतीत भव्यतरं खलु निखिलं प्रवर्तमानम्।

भावि भविष्यति भव्यतम ननु जयताद् भारत राष्ट्रम्।।''4

कविवर मिश्र जी ने 'वाग्वधूटी' में भारत की बहुरंगी सांस्कृतिक परम्परा के साथ– साथ राष्ट्रीय एकता एवं अंखड स्वरूप के प्रति समर्पित भावना को जिसप्रकार का स्वर दिया है वह प्रत्येक भारतीय के हृदय में मातृभूमि के प्रति गहन अभिमान,अनुराग और गौरवबोध को अभिव्यक्त करता है–

सलिलं सुधामधुरितं पवनोऽपि गन्धवाही
चरितं विकल्पकलितं धर्मो दयावगाही
यत्प्रांगण शबलितं कौतूहलैरशेषम्

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम्।।
गायन्ति यस्य देवाश्शुभगीतकानि नित्यम्
सर्वे भवन्तु सुखिनो यस्यैतदेव कृत्यम्
अभयप्रदोपदेशाः शमयन्ति पापलेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम्।।5

तदेव 'श्रुतिम्भरा' के एक गीत में भारत भूमि की प्राकृतिक छटा,सांस्कृतिक महानता, आध्यात्मिक महिमा और राष्ट्रीय एकता का स्तुति गान करते है और बारम्बार 'भारत वन्दे' कहकर अपनी श्रद्धा भाव को व्यक्त करते हुए कहते है–

यदभ्युदयस्तरणिबिम्बे चन्द्रमसि कीर्तिः
यस्य करूणा सिन्धुसलिले खगकुले गीतिः
सुव्रतं वन्दे! भारत वन्दे!
कुसुमनिचये यस्य हासः किसलये शिशुता
संस्कृते खलु वंशगाथा प्राकृते मृदुता
सत्कृते वन्दे! भारतं वन्दे! ।।6

राष्ट्रीय ध्वज किसी भी राष्ट्र की अस्मिता, स्वाभिमान और गौरव का सजीव प्रतीक होता है। 'वाग्वधूटी' में अभिराज मिश्र जी की राष्ट्रभक्ति, विश्वबन्धुत्व और भारत की शांतिप्रिय नीति का अतीव सुन्दर चित्रण दृष्टव्य है जिसमें कवि के हृदय में तिरंगेध्वज के प्रति गहन श्रद्धा व प्रेम का भाव प्रकट हुआ है–

अद्यापि यस्य नीतिहिर्विस्मापयत्यनल्पम्
उद्घोष्य विश्वशान्ति भावंच मित्रं कल्पम्
वन्दे ध्वजं त्रिवणं वन्देऽगृहीतकेशम्।।7

अर्थात् जिस अपने देश की नीति प्राचीन काल से एवं आज भी विश्व शांति का नारा लगाती है तथा विश्व बन्धुत्व की सद्भावना का उद्घोष करती हैह, विश्व को आश्चर्य चकित कर देती है,उस तिरंगे ध्वज की मैं वन्दना करता हूँ।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी के राष्ट्रीय गीतों मे जन्मभूमि के प्रति जो अखण्ड सांस्कृतिक अनुराग दृष्टिगोचर होता है,वह अनुराग उनके अनेक गीतों में अनेक भंगियों के साथ मुखरित हुआ है जोकि वाग्वधूटी,श्रुतिम्भरा, मधुपर्णी, मृद्वीका नामक संग्रहों में संकलित हुए हैं। मिश्र जी के उरू में राष्ट्र एवं भारतीय संस्कृति व संस्कृत के प्रति अगाध प्रेम दृष्टव्य होता है, तभी तो वे 'श्रुतिम्भरा' में गा उठते हैं–

संस्कृतमयं भवतु मम राष्ट्रम्
नवगौरवं दिशतु मम राष्ट्रम्

विना संस्कृतं कुत्र संस्कृतिः

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

विना संस्कृतं कुत्र निष्कृतिः
ये संस्कृत विरोधिनो जाताः
तेषां भवतु परेशस्त्राताः
तान् मर्षयतु सन्ततं राष्ट्रम्
राष्ट्र भारती भवतु संस्कृतम्
लोक भारती भवतु संस्कृतम्।।8

यहॉ स्पष्ट है कि कवि राष्ट्रीय गौरव के लिए भारतीय संस्कृति, एकता, सद्भाव, समृद्धि और सांस्कृतिक गौरव के उत्थान के लिए संस्कृत भाषा की उन्नति को अनिवार्य समझते हैं। वे कहते है जो लोग संस्कृत के विरोधी है,वे वास्तव में राष्ट्र के हित में नहीं है। इसीलिए तो वे संस्कृत को मृत भाषा कहने वालों को ललकारते हुए कहते है कि–

न मृता,म्रियते न मरिष्यति वा!
निगमागमगीतिमयी रूचिरा
रघुनाथकथामहिता मधुरा।
पुनरद्य दशाननकर्मरतान्
धननाद्मुखान् निहनिष्यति वा।
न मृता, म्रियते न मरिष्यति वा!! 9

'अभिराज' मिश्र जी की 'वाग्वधूटी' नवगीत संग्रह में एक प्रसिद्ध गीत है जिसमें राष्ट्र भक्ति समन्वित भावों की सुन्दर अभिव्यंजना दृष्टव्य है। उन्होंने भारत भूमि का मानवीकरण करते हुए उसकी अमृतमयी नदियां,पवित्र तीर्थस्थलों ,वनकन्तारों ,पर्वतीय अंचलों की भव्य झांकी प्रस्तुत करते हुए ' माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या' के पवित्र वैदिक भाव की अति गरीमामयी अभिव्यक्ति करते हुए भारत को 'भूमि' के साथ साथ माता के रूप में देखते है–

गंगा पुनाति भावं रेवा कटिप्रदेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेश।।
काशी प्रयाग मथुरा वृन्दाटवी विशालाः
द्वारावती सुकांचीविदिशादितीर्थमालाः
सम्भूषयन्ति कामं यस्य प्रशान्तवेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेश।। 10

मिश्र जी ने अपने स्वदेश के प्रति गहन प्रेम और श्रद्धा भाव से विभोर होकर पूर्ण मनोयोग से अपने देश का गुणगान करते हैं,वन्दना करते हैं। ' **मृद्वीका**' के 40 वें गीत में भारत की महिमा,भौगोलिक विशेषताएं और सांस्कृतिक गौरव का मंजुल रूप दृष्टव्य होता है–

''कांचनं वभूव यद्गतम्

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

मामकं तदेव भारतम्
युज्यते हिमालयो यदीयरक्षणे
वृद्धिमाप भूतलं यदीयशिक्षणे
वैखरी च यस्य संस्कृतम् ————————।।11

भारत देश स्वर्ण के समान मूल्यवान, प्राकृतिक संपदाओं से परिपूर्ण और आध्यात्मिक चेतना से ओत प्रोत है। उत्तर में हिमालय और दक्षिण में सागर से सुरक्षित यह भारत भूमि ने केवल भौगोलिक दृष्टि से समृद्ध है, अपितु सांस्कृतिक विविधता का अद्भूत उदाहरण प्रस्तुत करती है। केरल से लेकर उत्तर भारत तक और पूर्व से पश्चिम तक भिन्न भिन्न प्रदेश अपनी अपनी विशेषताओं के साथ मिलकर एकता का सुंदर स्वरूप प्रस्तुत करते है। साथ ही मिश्र जी के गीतों में भारतीय जीवन दृष्टि का भी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र जी के राष्ट्र प्रेम की भाव धारा उस समय चरम पर पहुॅचती है जब वह अखण्ड निष्ठा से एवं पूर्ण समर्पण भाव से भारतभूमि पर पुनः पुनः जन्म लेने की अभिलाषा व्यक्त करते है–

भवेदिह मर्त्यलोके जन्म मम भूयोऽपि शतवारम् परं स्याद् भारते।।
विराजन्तामनन्ताः शालयो नतमंजरीपुंजाः
सुशोभन्तां वनान्ताः दुष्प्रवेशलसन्नि चुलकुंजाः
भवेदिह मृत्तिकायां विलुठनं भूयोऽपि शतवारम् परं स्याद् भारते।।
वहेन्मम जनपदे गंगा तरणिजा किंचकावेरी
शतद्रुर्नर्मदा भद्राऽथवा संस्पृष्टश्रृंगेरी
भवेदिह निम्नगायां गाहनं भूयोऽपि शतवारम् परं स्याद् भारते।। 12

उनके गीत जाति– पंथ– वर्ग की सीमाओं से ऊपर उठकर सामूहिक हित का संदेश देते है। वे एक ऐसे लोकतन्त्र की परिकल्पना करते हैं जिसमें सर्व धर्म समन्वय हो साथ ही प्रत्येक व्यक्ति में एकता की भावना हों। मृद्वीका के ही उक्त गीत की पंक्ति में वे लिखते है–

जाति धर्म भारतीपृथक्त्बधर्षितम्
एकसूत्र कल्पितं तथापि जीवितम्
लोकतन्त्र भावना भृत्तम् ।।

परन्तु उनका हृदय तब विदीर्ण हो उठता है जब वे मानव जाति – धर्म के आधार पर एक–दूसरे से ईर्ष्या भाव एवं द्वैष भाव से ग्रसित होता हुआ देखते है–

द्वेषदैन्यधर्षितं शोकतापपर्जितम्,हन्त रक्तरंजितं दृश्यतेऽद्य भारतम् !!
————————————————————————————
जातिपंक्तिभावनां नानको न मन्यते,ग्रन्थसाहिबेऽर्जुनः सर्वसौख्यमश्नुते
सिक्ख्सम्प्रदायर्यिभिर्मगलं न वारितम्,हन्त रक्तरंजिंत दृश्यतेऽद्य भारतम्।।13

मधुपर्णी के 'रक्ष रक्ष भारतम्' गीत में भारत को 'विश्व संस्कृति विधायक' कहकर सम्बोधित करते है क्योंकि भारत केवल स्वतः के लिए ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए सांस्कृतिक मार्गदर्शक रहा है। यहॉ कि समृद्ध परम्परायें उच्च संस्कार और जीवन मूल्य सदैव मानवता को दिशा प्रदान करते आए हैं किन्तु वर्तमान

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

युग में पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण,सांस्कृतिक मूल्यों के अवमूल्यन तथा देवभाषा की उपेक्षा से मिश्र जी अत्यन्त व्यथित होते हुए लिखते है–

क्वाद्य तद् व्यतीत गौरवं क्वाद्य तच्चरित्र वैभवम्
गम्यतेऽद्य केन वर्त्मना येन नाशमेति भारतम्।।

————————————————।। 14

वर्तमान समय में राजनीति का स्वरूप अत्यन्त चिंताजनक होता जा रहा है। जहॉ राजनीति का मुख्य उद्देश्य लोककल्याण होना चाहिए, वहीं आज उसमें स्वार्थ, कपट,और पांखड की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही है। राजनीति की इस दुर्बल स्थिति पर मिश्र जी की चिन्ता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

दोषं मलं कलंक प्रपुनाति राजनीतिः
किं किं न लोकपुण्यं प्रददाति राजनीतिः।
निर्भत्स्र्य नीति मार्गः शप्त्वा च सत्यनिष्ठाम्
गहनं तमोऽपि भानुं विदधाति राजनीतिः!
पाटच्चरानमान्यान् प्रथितांश्च काम कीटान्
उद्धार्य कर्णधारान् निर्माति राजनीतिः।
भवितु न ये महान्तः शेकर्गुणप्रवालैः
आच्छाद्य तान् सुवस्त्रैर्वितनोति राजनीतिः! 15

राजनैतिक दुश्चक्रो में फॅसे राष्ट्र की स्थिति देखकर दुःखी कवि अत्यन्त चिंतित है–

भस्मासुर इव शिवं स्वतन्त्रम्,दग्धुं धावति किल जनतन्त्रम्,स्वार्थन्धतागिरिजया छलिता नेतारो विवशाः म्रियते जिजीविषा।।16

अर्थात् भस्मासुर की तरह आज का स्वतन्त्र जनतन्त्र भी अपने ही रक्षक और आधार को नष्ट करने की ओर अग्रसर प्रतीत होता है। यह जनतन्त्र मानो दूध की तरह (अस्थिर और उफनाता हुआ) इधर–उधर भाग रहा है, अर्थात् उसमें स्थिरता और संतुलन का अभाव है। स्वार्थ में अन्धे नेता,जो छल– कपट से भरे हुए है। 'गिरिजा'(जनता/शक्ति) के समान निरीह जनता को भी अपने स्वार्थ में फॅसा लेते है। ऐसी स्थिति में वे विवश होकर केवल किसी प्रकार जीवित रहने की इच्छा (जिजीविषा) में लगे हुए दिखाई देते है।

कवि राजेन्द्र मिश्र के गीतों में राष्ट्रवाद अपने विकसित रूप में दृष्टिगोचर होता है। राष्ट्र की दुर्गति से व्याकुल हो वे कह उठते है कि अरे! यह कैसी स्वतन्त्रता है?–

निर्दयं विरौम्यहं कोऽपि नो श्रृणोति मे
मामके हि भारते कीदृशी स्वतन्त्रता?
शोकताप जर्जरा द्रोह भार भङ्गुरा
अद्य दृश्यते न किं भारती वसुन्धरा
दुर्गते हि भारते कीदृशी स्वतन्त्रता?
मामके हि भारते कीदृशी स्वन्त्रता?

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

कवि कहता है कि आज की स्थिति ऐसी है कि विरोधी भी हमारी इस स्वतन्त्रता की प्रशंसा नहीं करते। देश शोक, दुःख और कष्टों से भरा हुआ है,मानव के जीवन में पीड़ा,अशान्ति और समस्याएँ व्याप्त है, ऐसी परिस्थिति में क्या वास्तव में भारतभूमि स्वतंत्र कही जा सकती है।देश की बिगड़ती परिस्थितियों– हिंसा,अशांति,राजनीतिक स्वार्थ और नैतिक पतन को देखकर कवि का मन अत्यन्त व्याकुल हो उठता हैं और बार बार वे प्रभु से प्रश्न करते है कि भारत किस दिशा में आगे बढ़ रहा है।**18**

किन्तु इन सब परिस्थितियों के बावजूद कविवर मिश्र जी को अटूट विश्वास है कि निश्चित ही भारत एक दिन पुनः अपने गौरव को प्राप्त कर विश्वगुरू के पद पर आसीन होगा। अतः वे भारतवासियों का आत्मगौरव जाग्रत कर अपने प्राचीन वैभव का स्मरण करने तथा सामाजिक विकृतियों को दूर कर समरसता, सौहार्द और एकता स्थापित करने की प्रेरणा देते हुए कहते है–

एत सौम्य बान्धवा बन्धुता विधीयताम्

क्षेत्र वर्णभावना सत्वरं निवार्यताम्
प्रांजलं पुनर्भवेद् येन भव्य भारतम्
विश्वपूजितं भवेन्मामकीनभारतम्।।19

अर्थात् हम सबके भीतर सौहार्द की भावना हो, और आपसी वैर–भाव का नाश हो जाए।क्षेत्र,वर्ण आदि के भेदभाव की भावना शीघ्र ही समाप्त हो जाए। इसप्रकार हम पुनः अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करें,और भारत फिर से एक महान,उज्जवल राष्ट्र बनें। तब भारत समस्त विश्व में प्रसिद्ध और सम्मानित होगा।

निसन्देह डॉ. अभिराज मिश्र आधुनिक संस्कृत साहित्य के विशिष्ट एवं सशक्त रचनाकार हैं। उन्होंने परम्परा और आधुनिक युगबोध का अद्भुत समन्वय करते हुए अपनी प्रबल अक्षर तूलिका से ऐसी अभिव्यक्ति दी है, जिनके कारण वे युगों युगों तक अभिनन्दनीय रहेंगे। उनकी रचनाओं में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना अत्यन्त प्रभावशाली रूप से दृष्टव्य होती है। वे केवल राष्ट्रीयता व देशप्रेम का यशोगान ही नहीं करते अपितु भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों और दुर्वृत्तियों को भी बड़ी ही बेबाकी से पाठकों से समक्ष प्रस्तुत करते हैं। उनके व्यंग्य इतने सशक्त व प्रभावकारी है कि वह पाठकों को आत्ममंथन के लिए विवश कर देता है। उन्होंने भारत भूमि की समकालीन समस्याओं को केवल उजागर ही नहीं किया अपितु उनके भारतीय संस्कृति मूलक समाधान भी प्रस्तुत किये है। उनकी लेखनी में निरंतर नवीनता,गहन चिन्तन और तीक्ष्ण दृष्टि का समावेश है उनके प्रत्येक पद में राष्ट्रीय चेतना का ओजस्वी स्वर स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित होता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 07, July 2026 website- www.ijarps.org DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21802192

सन्दर्भ सूची

1 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र – नवगीत संग्रह– मधुपर्णी – वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या– 45
2 ,, ,, – मधुपर्णी ,, ,, पृष्ठ संख्या– 46
3 ,, ,, – मधुपर्णी, ,, ,, पृष्ठ संख्या–47
4 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या–51
5 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र– ,, वाग्वधूटी – अक्षयवट प्रकाशन , इलाहाबाद– ,, ,,–12
6 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या 49
7 ,, ,, वाग्वधूटी – अक्षयवट प्रकाशन , इलाहाबाद पृष्ठ संख्या– 13
8 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या 20–35–39
9 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या 40–41
10 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र– ,, वाग्वधूटी – अक्षयवट प्रकाशन , इलाहाबाद– ,, ,,–12
11 ,, ,, मृद्वीका – वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 58–59
12 ,, ,, – मधुपर्णी ,, ,, पृष्ठ संख्या– 43
13 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या 58–59
14 ,, ,, – मधुपर्णी ,, ,, पृष्ठ संख्या– 47–48
15 ,, ,, मृद्वीका ,, ,, पृष्ठ संख्या 57
16 ,, ,, मृद्वीका ,, ,, ,, 65
17 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या–55
18 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या–71
19 ,, ,, – श्रुतिम्भरा ,, ,, पृष्ठ संख्या– 60